गुरु-चांडाल योग

(22-जून-2016 - Sushil Agarwal) - Blog on Speaking Tree

वर्ष 2016 में सिंह राशि में गुरु-राहू की युति है और लगभग 9-सितम्बर तक यह युति रहेगी. राहू-गुरु की युति को गुरु-चांडाल योग भी कहते हैं. यह योग जन्मकुंडली में, गोचर में या दोनों में निर्मित हो सकता है. हालांकि इस योग का मुझे अभी तक कोई शास्त्रीय सन्दर्भ नहीं मिल पाया है फिर भी सामान्यता इस युति की चर्चा एक अशुभ योग के रूप में की जाती है. इसकी चर्चा अधिक इसीलिए भी है क्योंकि जहाँ गुरु नियम, परंपरा और ज्ञान के कारक हैं वहीं राहू परंपरा के विरुद्ध जाने वाले, भ्रम पैदा करने वाले, मोह-माया में आसक्ति उत्पन्न करने के कारक हैं जिसका सन्दर्भ पौराणिक कथाओं (अमृत मंथन) में भी मिलता है. अर्थात, दोनों ग्रह परस्पर विरोधी प्रवृति के हैं.

मेरे अनुभव के अनुसार अगर जन्मकुंडली में यह युति दुस्थित और अशुभ प्रभावित है, सम्बंधित भाव की दशा है तभी गोचरवश गुरु-चांडाल योग के अशुभ फलों की सम्भावना प्रबल होती है. अन्यथा, गोचरवश युति केवल प्रवृति और वातावरण पर ही असर डाल सकेगी, जैसे जातक को भ्रम की स्थिति में डालना, अपरंपरागत तरीके से कार्य की प्रवृति देना आदि.

मेदिनी में गोचर की प्रधानता होती है इसीलिए मेदिनी के दृष्टिकोण से यह युति जातक फलित की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है. अगर भारत की वृषभ लग्न के अनुसार देखें तो यह युति चतुर्थ भाव में स्थिर (सिंह) राशि में है. यह भूकंप की सम्भावना को बढाता है. जनता के सुख में विभिन्न कारणों से कमी आती है, जैसे सूखा, आतंकवादी हमले, भ्रष्टाचार, धार्मिक असहिष्णुता आदि. जब-जब मंगल या/और शनि का भी इस युति पर प्रभाव आएगा तो अशुभता की मात्रा में भी बढ़ोतरी होगी.

http://hindi.speakingtree.in/blog/%E0%A4%97%E0%A5%81%E0%A4%B0%E0%A5%81%E0%A4%9A%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%A1%E0%A4%BE%E0%A4%B2-%E0%A4%AF%E0%A5%8B%E0%A4%97